सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 | अंक : 9 | 5 दिसम्बर 2018 | मूल्य : 20 रु.

अवंती तीर्थ
जाजम समारोह

श्री अवन्ति पार्श्वनाथाय नमः

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ उज्जैन

श्री उज्जैन नगरे

मूलनायक श्री अवन्ति पार्श्वनाथ प्रभु का उत्थापन किए बिना

जीर्णोद्धार के पश्चात अंजनशलाका प्रतिष्ठा

एवं

मुमुक्षु शुभम लूंकड़ व मुमुक्षु अंशु देशलहरा का

दीक्षा महोत्सव

पावन निश्रा

पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

महोत्सव प्रारंभ

माघ सुदि ८, बुधवार

दिनांक 13 फरवरी 2019

प्रतिष्ठा व दीक्षा

माघ सुदि १४, सोमवार

दिनांक 18 फरवरी 2019

सकल श्रीसंघ से इस महान ऐतिहासिक अवसर पर पधारने का हार्दिक निवेदन हैं...

निवेदक

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन

हीराचन्द छाजेड़	निर्मल कुमार सकलेचा	चन्द्रशेखर डागा	ललित कुमार बाफना
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
94068 50603	9407130220	9425091340	9425379310

[illegible] विजयचन्द कोठारी महेन्द्र कुमार [illegible] [illegible] कुमार [illegible] [illegible] कुमार मेहता

विनीत

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, उज्जैन

पारसचन्द जैन	पुखराज चौपड़ा	संघवी कुशलराज गुलेच्छा, बैंगलोर
अध्यक्ष, मंत्री म.प्र. शासन	उपाध्यक्ष	संयोजक
09425091497	09425195874	09844066064

आयोजन स्थल

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ, दानीगेट, उज्जैन (म.प्र.) फोन – 2555553, 2585854

+919111882888 +919009091199, +918884440928

www.avantitirth.com avantitirth@gmail.com

Follow us on: avantitirth

आवास हेतु संपर्क : अशोक कोठारी 9827444011, दिलीप चोपडा 9425091387

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पाणमेव अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए॥

आत्मा के साथ ही युद्ध करो। बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा जीतनेवाला मनुष्य सुख पाता है।

Why are you fighting with external enemies? Fight with your own self.
One who conquers one's own self enjoys true happiness.

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 9 5 दिसम्बर 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ : इतिहास के झरोखे से...	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
4. पढ़ते समय नींद से कैसे बचें	कैलाश बी. संखलेचा	10
5. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	11
6. खरतरगच्छ की गौरवमयी परम्परा	हजारीमल बांठिया, कानपुर	13
7. समाचार दर्शन	संकलन	15
8. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	26

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की पावन निश्रा में आगामी शासन प्रभावक समारोह

- दादावाडी प्रतिष्ठा, रागबाग इन्दौर 18 जनवरी
- दादावाडी प्रतिष्ठा, देपालपुर 25 जनवरी
- इन्दौर से उज्जैन पैदल संघ प्रस्थान 30 जनवरी
- उज्जैन में संघ का प्रवेश व तीर्थमाला 2 फरवरी
- अवन्ति तीर्थ उज्जैन महाप्रतिष्ठा 18 फरवरी 2019

अपनों से निवेदन

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष गतिमान है। इससे संबंधित/संदर्भित आलेख, कविता आदि प्रकाशन योग्य सामग्री एवं जिनशासन संबंधित समाचार कृपया प्रकाशन हेतु अवष्य प्रेषित करें।

निवेदन है कि मेल आदि से निबंध, समाचार आदि हर महिने की 28 तारिख तक कार्यालय को प्राप्त हो जाय, इस तरह अवश्य भिजवायें।

Jahajmandir99@gmail.com

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

व्यवहार और निश्चय की परिभाषा का चिंतन कर रहा था।

जीवन की इन दोनों धाराओं के बीच साधक अपने मन को संतुलित कैसे करे! यह प्रश्न चित्त को उद्वेलित कर रहा था। क्योंकि दोनों उत्तर-दक्षिण की भांति भिन्न हैं। दोनों दो दिशाऐं हैं, मगर दोनों आवश्यक हैं।

व्यवहार की याचना अलग है। निश्चय की कामना अलग है।

व्यवहार अधिक से अधिक चाहता है।

निश्चय कम से कम होकर शून्य हो जाना चाहता है।

व्यवहार को सब कुछ चाहिये, तभी उसे आनंद आता है।

निश्चय कुछ नहीं में परम आनंद का अनुभव करता है।

व्यवहार में डूबा मन कभी तृप्त नहीं हो पाता।

निश्चय में डूबा मन हर पल परम तृप्ति का अहसास करता है।

व्यक्ति व्यवहार के बिना जी नहीं सकता। और व्यवहार की मांग कभी पूरी नहीं हो सकती।

निश्चय बिना के जीवन की कल्पना जीवन की हार है क्योंकि व्यवहार क्षणिक है, निश्चय स्थायी है।

या यों कहें कि व्यवहार क्षणिक सत्य है। निश्चय शाश्वत सत्य है।

दोनों में मेल कैसे हो!

और तभी जैसे बिजली कौंधी! जैसे बुद्धि रोशन हुई! जैसे कांच के टुकडों के मध्य हीरा चमका!

एक सूत्र मिला!

व्यवहार में अनासक्ति लाओ! जो है, जैसा है, उसे तृप्ति के साथ स्वीकार करो! उसमें बहुत ज्यादा समय न दो! प्रतिभा न दो! शक्ति और सामर्थ्य न दो!

निश्चय में सावधान रहो! उसमें सूक्ष्मता लाओ! निपुणता लाओ! अपनी सारी चतुराई निश्चय के लिये झोंक दो!

फिर देखो! जीवन-यात्रा का परम आनन्द! हर पल तृप्ति! हर पल अखंडता का अनुभव!

सोलह सतियाँ
कथानक
8

विलक्षण वैराग्यवती सती राजीमती

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

ओह! यह विक्षेप कैसा? आते हुए रथ और बाराती रूक क्यों गये? क्यों बंद हो गया शहनाई-वादन और इत्र का छिड़काव? प्रश्नों के जाल में फँसी हुई राजीमती कहीं भी समाधान का तट नहीं पा रही थी।

कुछ क्षणों पहले चेहरे पर कुलाचें भरता गुलाबी रंग निस्तेज होने लगा था कि एक सखी दौड़ी-दौड़ी राजीमती के पास पहुँची और कहने लगी-तूंने कुछ सुना सखि !

नहीं ! क्या हुआ?राजीमती उतावली होकर बोली ।

सखी ने कहा-राजी ! नेमिकुमार स्वागत द्वार पर पहुँचने के पहले ही प्रत्यावर्तित हो गये। सुना है कि गिरनार पर्वत की कन्दराओं में चले गये हैं। यह बंधन उन्हें स्वीकार्य नहीं है। सुनते ही राजीमति के कोमल हृदय को गहरा आघात लगा। वह मूर्च्छित हो जमीन पर गिर पड़ी । इर्द-गिर्द उपस्थित सारी सहेलियाँ घबरा गयी।

दो सखियाँ दौड़कर नृपति उग्रसेन के कक्ष में पहुँची और राजीमती की अस्वस्थता के समाचार दिये। राजा उग्रसेन की सांस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी।

क्षणमात्र का भी विलम्ब किये बिना वे राजीमती के कक्ष में पहुँचे, तब तक निश्चेष्ट राजीमती को कोई सखी हवा कर रही थी तो कोई शीतल जल बून्दों का छिड़काव ।

ज्यादा देर तक गंभीर स्थिति नहीं रही।

कुछ पलों में होश में आयी राजीमती नेमि ! नेमि! पुकारने लगी।

राजीमती के आँसू पोंछती हुई माँ वात्सल्यसिक्त शब्दावली में बोली-अरी पगली! ऐसा क्या हो गया जो तूं इस तरह विलाप किये जा रही है। तुझे क्या पता, तेरी आँखों के ये आँसू अंगारें बनकर मेरे हृदय को किस प्रकार जख्मी कर रहे हैं! और तेरे पिताजी को देख! उनका मुख-तेज सूर्यग्रहण से ग्रस्त हो गया है ।

पर माँ ! ऐसा क्यों किया नेमि कुंवर ने ? पहले तो सपने दिखाए और अब आँखें ही छीन ली। मेरी माँग में सिन्दूर सजने से पहले ही उजड़ गया माँ....! कहती हुई राजीमती फफक पड़ी।

इतने में एक कृष्णवर्णीय परन्तु सौम्य आकृति राजीमती के मानस-धरातल पर उतर आयी।

अधरों पर सजी मुस्कान। चेहरे पर बिखरा संयम का माधुर्य देखकर जैसे राजीमति का खुद पर अधिकार न रहा। वह खींची चली गयी उसके अद्‌भुत आकर्षण में।

पल दो पल में मिश्री से मधुर शब्दावली कर्णकुहरों से आ टकरायी-राजी! महाभिनिष्क्रमण की पुण्य घड़ियों में यह विषाद कैसा! कैसी यह उदासी? ये पल तो बधाने के हैं। मैं तो चाहता हूँ कि पाँवों में घुंघरू बांधकर तुम जी भरकर नाचो, आनंद के गीत गाओ।

राजी ! मैं जानता हूँ कि मेरे इस कठोर निर्णय से तुम राजी नहीं हो। क्योंकि तुम मेरे संसार के मोह में डूबी हो, नव-नव भवों तक मेरी स्नेह-धारा में रची-पची हो ।

मैं जब देव बना, तुम देवी बनी ।

मैं जब राजा बना, तूं मेरी रानी बनी ।

मैं रोया तो तूं रोयी। मैं सोया तो तूं सोयी। मेरे हर सुख-दु:ख में अभिन्न सखा रही हो तुम ।

पर राजी! यह राग संसारवर्धक है। रेत में से तेल

निकले तो इस असार संसार से सार मिले। स्नेह के सूत्रों को छिटकाये बिना शाश्वत सुख की प्राप्ति असम्भव है।

मेरा जीवन बंधन से निर्बंध की ओर जाने के लिये है। विवाह का बंधन मुझे पहले से ही अस्वीकार्य था। संकोचशील स्वभाव के कारण मैं अपनी भावना को शब्द न दे सका तो क्या हुआ, पशुओं की मर्मभेदी चीत्कार ने मेरे मौन संकल्प को आचार के स्वर दिये।

किसी के प्राणों को स्वार्थ की वेदी पर होमकर स्वप्राणों का पोषण दैवी स्वभाव नहीं, दैत्य स्वभाव है।

राजी स्वगत हो कह उठी-अरिष्ट! तुमने पशुओं की तो पुकार सुनी और मेरा निवेदन अनसुना कर रहे हो।

राजी! सरासर झूठ बोल रही है तूं। अरे! अपने भीतर ईमानदारी से झाँककर देख तो सही।

क्या तेरे रोम-रोम में अरिष्ट नहीं है?

जब तेरे खून के कतरे-कतरे में अरिष्ट है, तब अपनी भिन्न अनुभूतियाँ और विभिन्न पगडंडियाँ क्यों रहे?

जब नव भवों तक संसार साथ-साथ बांधा तो उसे तोड़ने की साधना भी साथ-साथ ही करनी है। क्या तूं नहीं जानती कि भोगों में जीने-मरने वाले तो कीड़े होते हैं। भोगों का जीवन तो पशुता का जीवन है। दिव्यता और भव्यता तो त्याग व विराग के ही अंग हैं। संयम-दीप की ज्योति में ही पशुत्व से प्रभुत्व की ओर बढ़ा जा सकता है।

राजी! नेमि तुमसे पूछ रहा है कि तुम क्यों खड़ी हो राग-द्वेष के कंटकवन में! विषय और कषाय के बंधनों को काटकर ही संयम के उपवन में प्रवेश पाया जा सकता है।

संयम खलु जीवनम्....संयम खलु उपवनम्.... कहती हुई नेमि की आकृति अन्तर्धान हो गयी। राजी जब बाहर के संसार में लौटी, तब उसका मुखमंडल नूतन संकल्प के ओज और तेज से चमक रहा था। राजा उग्रसेन कह रहे थे-तनये! तुझे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नेमि नहीं तो क्या हुआ?और भी कितने ही राजकुमार तुम्हारी 'हाँ' की प्रतीक्षा में खड़े हैं। फिर वह तो काला था। बीच में राजीमती बोल पड़ी-पिताजी! शायद आपको पता नहीं है। मैंने उनके रंग और रूप से मोह नहीं किया था। मेरा प्रेम दिखावटी या बनावटी नहीं है, वे मेरी सांसों में सुवास बनकर और जीवन की आश बनकर आये थे।

और रही अन्य राजकुमार की अभीप्सा, वह सच में तो क्या, सपने में भी नहीं कर सकती। 'सकृत कन्या दीयते' इस मंत्र को मैंने पढ़ा ही नहीं अपितु प्राणों में बसाया है। मुझे अरिष्ट के अतिरिक्त अन्य कोई न इष्ट है, न अभीष्ट है।

मेरा जीना भी उनके साथ है, और मरना भी उनके साथ है। राजीमती के इस कठोर निर्णय से उग्रसेन चौंक उठे।

वे बोले-लाडली! तूं कोमलांगी और संयम की कठोर पगडंडियाँ। तेरी ये मखमली....कोमल-कमनीय काया क्या कष्टों के कांटों से छलनी छलनी नहीं हो जाएगी?

माँ ने कहा-बेटी! संयम का मार्ग प्रतिकूलता का मार्ग है।

बावीस परीषहों को जीतना, अष्ट प्रवचन माता का पूर्ण आदर करना, प्रतिकूलता में भी हँसते हुए चलते जाना कोई सरल काम नहीं है। लोहे के चने चबाना अथवा तलवार की धार पर नंगे पाँव चलना आसान है पर संयम मार्ग में धीर-वीर-गम्भीर बनकर विघ्नों को पराजित करना दुष्कर है।

तुम एक बार गहराई से सोच लो। पर राजीमती का निर्णय अटूट था।

वह दिन भी आ गया जब राजीमती की अन्तर्यात्रा का प्रारम्भ हो गया।

अर्हत् नेमि के सानिध्य में उसकी साधना उत्तरोत्तर खिलने लगी।

और एक दिन घटनाक्रम यों बना कि राजीमती सहवर्ती श्रमणियों के साथ अर्हत् नेमि की वन्दना के लिये रैवताचल पर चढ रही थी कि मध्यमार्ग में भयंकर आंधी के साथ तीव्र वर्षा की रूकावट आ गयी। काली घटाएँ....ठंडी हवाएँ और खुलकर बरस रहे मेघकुमार देव।

(क्रमशः)

इतिहास के झरोखे से

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ :

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ का इतिहास अनूठा है। यह घटना उस समय की है जब परमात्मा महावीर की परम्परा में आचार्य महागिरि व आचार्य सुहस्तिसूरि का शासन चल रहा था।

आचार्य सुहस्ति अपने शिष्यों के साथ उज्जैन नगर में पधारे थे। वसति की गवेषणा करते करते वे भद्रा सेठानी के विशाल सप्त मंजिले महल में पहुँचे। भद्रा सेठानी ने एक विशाल हॉल उन्हें रूकने के लिये श्रद्धा के साथ अर्पण किया।

रात्रि का प्रथम प्रहर चल रहा था। नीरव वातावरण था। आचार्य सुहस्ति अपने साधुओं के साथ स्वाध्याय कर रहे थे। एक साधु बोल रहा था, एक साधु सुन रहा था। स्वर धीमा था। मगर मौन वातावरण के कारण उनका स्वर उसी महल के ऊपरी मंजिल में रहने वाले भद्रा सेठानी के पुत्र अवंति सुकुमाल के कानों में पड रहा था।

स्वाध्याय में देवलोक के वर्णन वाले पाठ उनके श्रीमुख से उच्चरित हो रहे थे। जब ये बोल उस श्रेष्ठिपुत्र अवंति सुकुमाल के कर्णकुहरों में पडे तो वह चौंक उठा। एकाग्र हो गया। शब्दों के अर्थ की गहराई में डूब गया। उस पाठ में नलिनीगुल्म देवविमान का विस्तार से वर्णन था। उस वर्णन को श्रवण कर उसे महसूस हुआ कि इस वर्णन के अनुसार वाले विमान को तो मैंने देखा है! यह स्थान मेरा परिचित है! कहाँ देखा है! यह याद नहीं आ रहा है।

उसने अपने मस्तिष्क पर जोर डाला। शिराऐं तन गई। कुछ ही पलों बाद जातिस्मरण ज्ञान प्राप्ति के परिणाम स्वरूप वह अपने पूर्व भव को हस्तामलकवत् देखने लगा।

उसे याद आया। वह पूर्व भव में नलिनीगुल्म विमान का अधिपति देव था। उसे देवलोक याद आने लगा। देवलोक के सुख याद आने लगे।

वह उसी समय दौडता हुआ पूज्य आचार्य भगवंत के श्रीचरणों में पहुँचा। उसने कहा– भगवन्! अभी मुनिवर जिस नलिनीगुल्म विमान का वर्णन कर रहे थे। मैं वहीं से आया हूँ। भगवन्! मुझे वापस वहीं जाना है। वही विमान वापस पाना चाहता हूँ। कृपा करके मुझे रास्ता बतायें।

आचार्य भगवंत ने उसके हलुकर्मी स्वभाव का अनुभव कर धर्म का उपदेश देना प्रारंभ किया। जीव और अजीव का भेद समझाया! संसार के स्वरूप से परिचित कराया। शुद्ध धर्म का बोध दिया। सुख का स्वरूप समझाया। तुम जिस सुख के पीछे भाग रहे हो, वह सुख है ही नहीं, मात्र भ्रमणा है, सुखाभास है। असली सुख तो आत्मा में है। वह स्थायी है।

संसार का सुख आज है, कल नहीं।

आत्मा का सुख शाश्वत है। एक बार प्राप्त करने के बाद वह सदा–सदा का साथी हो जाता है। बल्कि यों कहना चाहिये– तुम स्वयं सुख रूप हो जाते हो!

नलिनीगुल्म विमान का सुख भी कुछ समय के लिए होता है। पर मोक्ष का सुख तो अनंतकाल के लिए है अतः मोक्षमार्ग का अनुसरण करो।

उस श्रेष्ठि पुत्र के रोम–रोम में आचार्यश्री की देशना रम गई। वह शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिये अधीर हो उठा।

वह श्रेष्ठि पुत्र जिसका नाम था अवंति सुकुमाल मुमुक्षु हो गया... वैरागी हो गया...। उसने आचार्यश्री से संयम प्रदान करने की प्रार्थना की। आचार्य ने कहा– जाओ! अपनी मां और परिवार की आज्ञा लेकर आओ।

दौडा हुआ गया अपनी मां के पास और उनसे चारित्र ग्रहण की आज्ञा मांगने लगा।

अभी छोटी उम्र थी... युवा अवस्था थी। कुछ समय पहले ही तो माता भद्रा ने 32 सुन्दर कन्याओं के साथ उसका विवाह किया था। उसकी माता भद्रा ने माता और पिता दोनों का कर्त्तव्य निभाया था.... वात्सल्य लुटाया था।

जब व्यक्ति को धर्म का शुद्ध बोध हो जाता है, तो फिर उसे अधर्म त्याग की प्रेरणा नहीं देनी पडती। वह स्वतः परम प्रसन्नता के साथ उसका त्याग कर देता है। अवंती सुकुमाल ने जब माता भद्रा से संयम की आज्ञा मांगी तो वह रो पडी। वह तरह–तरह से समझाने लगी। पर अवंती सुकुमाल के प्रेम भरे सत्य–वचनों ने उसे निरूत्तर तो कर दिया। पर आज्ञा नहीं मिली। उसने स्वयं ही अपने हाथों केशलुंचन कर लिया। साधु वेश धारण कर लिया।

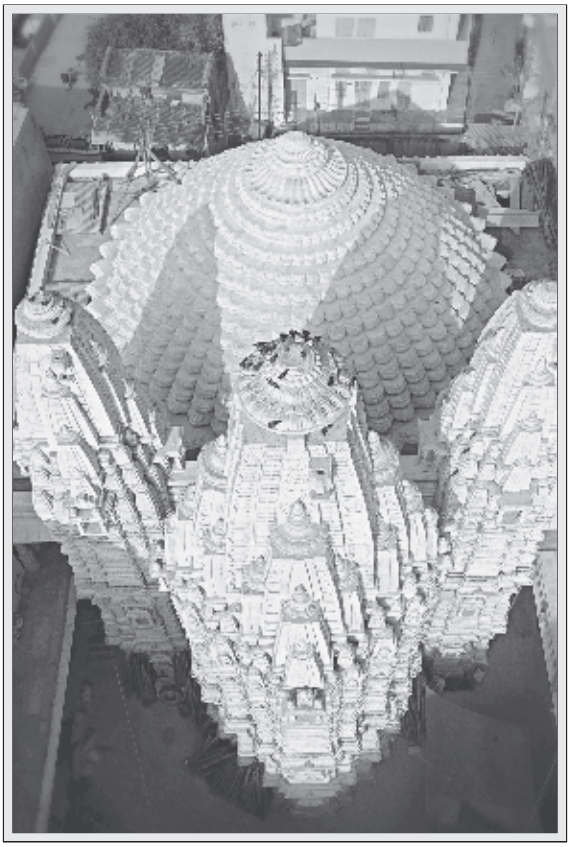

प्रातःकाल की वेला में पूरव दिशा की कोख से उतरी सूरज की किरणों के साथ ही अवंती की वेशभूषा में परिवर्तन हो गया। वह साधुवेश स्वीकार कर आचार्य सुहस्ति के श्रीचरणों में पहुँच गया। आचार्यश्री ने जब उसकी यह वेशभूषा देखी... उसके चेहरे पर छाई संयमी होने की तीव्र ललक देखी... तो आचार्यश्री ने उसे विधि पूर्वक प्रव्रज्या प्रदान की।

वह सुकुमाल था! उसकी काया अत्यन्त सुकोमल थी। उसने कहा– प्रभो! मैं अपनी काया के कारण लम्बे समय तक कठोर संयम की साधना नहीं कर पाउँगा। अतः मैं अनशन करना चाहता हूँ!

आचार्यश्री ने कहा– तुम कैसे परिषह सहन कर पाओगे! उसने कहा– मेरी काया कोमल है... पर मेरा अन्तर्मन दृढ़ श्रद्धा के कारण पूर्ण रूप से कठोर है।

आचार्यश्री की अनुज्ञा प्राप्त कर वह चल पडा श्मसान की ओर! तीक्ष्ण कठोर कंकरों के स्पर्श से उसकी पगथलियों से खून बहने लगा। दर्द के अनुभव में वह समता का अनुभव करने लगा।

बहते खून के साथ वह पहुँच गया श्मसान में! कायोत्सर्ग में स्थित हो गया। भक्तप्रत्याख्यान कर लिया।

ध्यान साधना में परम स्थिर हो गया। आत्मानुराग आत्मानुभव में परिवर्तित करने की साधना चित्त में रमने लगी।

तभी प्रकोप प्रारंभ हुआ। अशातावेदनीय कर्म का भयंकर प्रहार हुआ। एक सियारनी अपने बच्चों के साथ खून का रास्ता देख कर पीछे–पीछे चली

आई। मुनि के पास पहुँच गई। पॉव से बहने खून को चाटने लगी। चाटते–चाटते उसने मुनि के दांयें पॉव पर हमला बोल दिया। धीरे–धीरे पॉव को उदरस्थ करने लगी। सियारनी के बच्चों ने बांयें पॉव को खाना प्रारंभ किया। प्रथम प्रहर बीतते–बीतते घुटनों तक के पॉव को खा गये। दूसरा प्रहर पूरा होते–होते जंघा तक के पॉव को और तीसरे प्रहर में पेट तक की काया को सियालिनी ने अपना आहार बना लिया।

अपार पीडा में भी मुनि अवंति सुकुमाल ने अपने चित्त की समाधि को विचलित नहीं होने दिया।

भयंकर पीडा में भी उनका आत्म–चिंतन उपस्थित रहा। शरीर मेरा नहीं। पीडा काया की है। मेरी आत्मा अजर अमर है। मैं आत्मा हूँ। इस चिंतन ने दर्द में भी समाधि दी।

समता की कडी परीक्षा थी.... धीरज गुण का चरम स्पर्श हो रहा था! रोम–रोम में समाधि और धृति प्रकट हो रही थी।

उन्होंने अपनी काया का उत्सर्ग किया था! पूर्ण स्थिरता का अभिग्रह लिया था। पीडा अपार थी... चिंतन स्व–पर का था। वैचारिक प्रवाह उनके हृदय में प्रकट हो रहा था कि जिसे दर्द हो रहा है, वह मैं नहीं। मैं वह हूँ, जिसे दर्द कभी हो नहीं सकता।

जो मृत्यु का साक्षात्कार कर रहा है, वह मैं नहीं और मैं सदा अजर अमर हूँ, मैं कभी मर नहीं सकता। मुझे मुझमें रमण करना है.... मुझे स्व में स्वत्व की अनुभूति करनी है...! पर की व्यवस्था से मुझे कोई मतलब नहीं।

कुछ ही पलों में काया ने साथ छोड दिया। आयुष्य की पूर्णाहुति और आत्म–द्रव्य का प्रस्थान!

छलांग लगी मुक्ति की दिशा में! अवंती मुनि का हृदय प्रमोद भावों से भर उठा। वह अपने वर्तमान से प्रसन्न था। क्योंकि उसमें सही भविष्य की दिशा थी।

वह वहाँ से सीधे मुक्तिपुर में तो नहीं जा पाया। पर उसका सामीप्य पा लिया। मुक्ति होने के निश्चय ने उसे निश्चिंत कर दिया था।

अवंती मुनि नलिनीगुल्म विमान का स्वामी बना। इस विमान को पाने का अब कोई सुख नहीं था... न उसकी तितिक्षा थी! वह तो केवल और केवल संपूर्ण कर्म क्षय के परिणाम मोक्ष का

अभिलाषी था।

वह विमान में या विमान के सुखों में नहीं उलझा! इसे पडाव मात्र समझा। उसका हृदय इस मनोरम पडाव से नहीं चिपका। देवलोक में वह सावधान होकर जीने लगा।

इधर प्रातःकाल होने पर मां भद्रा व उसके परिवार ने मुनि अवंती के दर्शन करने चाहे। उपाश्रय में उनके न दिखाई देने पर प्रश्नचिह्न की मुख मुद्रा में आचार्य महाराज के पास पहुँचे। उनके प्रश्न के उत्तर में गुरु महाराज ने फरमाया– वे मुनि वहाँ चले गये, जहाँ से आये थे।

मां भद्रा ने कहा– आपकी बात कुछ समझ में नहीं आई।

गुरु महाराज ने सारी घटना सुनाकर उनके नलिनीगुल्म विमान में जाने की बात कही।

सारा वृत्तान्त सुनकर सभी वैराग्यवासित हो गये। मां भद्रा व अवंती की इकतीस पत्नियों ने संयम ग्रहण कर लिया। एक पत्नी गर्भवती होने के कारण चारित्र ग्रहण नहीं कर पाई।

उसने समय की परिपक्वता होने पर बालक को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया– महाकाल! उसने अपने पिता मुनि अवंती के समाधि स्थल पर नलिनीगुल्म के आकार का विशाल जिनमंदिर बनाया। उसमें पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा प्रतिष्ठित की। वह प्रतिमा अवंती पार्श्वनाथ प्रभु के नाम से विश्वविख्यात बनी।

वह प्रतिमा बाद में आचार्य श्री सिद्धसेनदिवाकर सूरि द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना से प्रकट हुई। इस जीर्णोद्धारित तीर्थ की प्रतिष्ठा 18 फरवरी 2019 को संपन्न होने जा रही है।

प्रेरणा

पढ़ते समय नींद से कैसे बचें

प्रस्तुति : कैलाश बी. संखलेचा

यह एक बहुत ही आम समस्या है। जैसे ही हम पढ़ने बैठते हैं नींद आने लग जाती है। और पढ़ने मे मन लगना भी बंद हो जाता है। यह स्थिति बच्चों के अंदर सबसे अधिक आती है। नींद आने पर कुछ समय तो जबरदस्ती पढ़ने की कोशिश करते हैं किंतु अंत में उनको सोना ही पड़ता है। यह कोई एक दिन की समस्या नहीं है। वरन रोज जैसे ही बच्चे पढ़ने बैठते हैं नींद आने लग जाती है। वे चाहकर भी अपना पाठ याद नहीं कर पाते और उनके पास इस समस्या का कोई स्थाई समाधान भी नहीं होता।

वैसे पढ़ते समय नींद आने के कई कारण हो सकते हैं किंतु यदि आप रोज भरपूर नींद लेते हैं और पढ़ने बैठते ही दुबारा नींद आने लगती है तो यह रोगगत समस्या हो सकती है। इसके समाधान हेतु आप निम्न टिप्स का अनुशरण कर सकते हैं–

कम रोशनी में कभी ना पढ़ें– बहुत से छात्र सिर्फ़ एक स्टडी लैंप जला कर ही पढ़ाई करते हैं जिसकी वजह से कमरे के बाकी हिस्से में तकरीबन अंधेरा रहता है। ऐसा वातावरण आपको सोने के लिए प्रेरित करता है, ऐसे वातावरण में नींद आना तो लाजिमी है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए अपने स्टडी रूम को पूर्णतः प्रकाशमान रखें।

लेटकर पढ़ने से बचें– पढ़ाई करते समय आपका आसन किस प्रकार है, यह भी बहुत महत्त्व रखता है। लेटकर कभी ना पढ़ें। इससे आप में आलस आ सकता है, जो कि नींद को आमंत्रित करता है। इसलिए पढ़ाई करते समय हमेशा कुर्सी पर सही ढंग से पीठ सीधी रखकर ही बैठें। सामने एक टेबल रखें और किताब गोद में रखकर पढ़ने की बजाए सामने टेबल पर रखकर पढ़ें। यदि आप कुर्सी पर बैठे है तो भी अपने हाथ या पांव कुछ–कुछ समय अंतराल पर हिलाते रहे। इससे आपके शरीर में सुस्ती नहीं आएगी और सक्रियता बनी रहेगी।

रोजाना करें पढ़ाई– काफी विद्यार्थी वर्ष भर नियमित पढ़ाई नहीं करते और परीक्षा के निकट आते ही सब कुछ पढ़ने के लिए 6 से 7 घंटे अध्ययन करने के लिए खुद को प्रेरित करते हैं पर जब पढ़ने बैठते हैं तो कुछ ही समय में उन्हें नींद आनी शुरू हो जाती है। उन्हें पढ़ा हुआ कुछ भी समझ नहीं आता और पूरी पढ़ाई में बोरियत होने लगती है। अतः रोजाना पढ़ते रहें और पढ़ाई को बोझ और बोरियत न बनने दें। रोजाना न पढ़ना भी नींद आने का एक कारण है।

पढ़ाई का समझ नहीं आना– अगर आप पढ़ाई करने बैठ रहे हो लेकिन आपको ये नहीं पता की कौनसा विषय आपको पढ़ना है और आप कोई सा भी सब्जेक्ट उठा के पढ़ने बैठ जाते हो और आपको वो विषय समझ नहीं आता तो ऐसे में आपको नींद यानि आलस आना शुरू हो जाता है। इसके अतिरिक्त ध्यान से नहीं पढ़ने से नींद या आलस आना शुरू हो जाता है।

पढ़ाई करते वक्त हमेशा नोट्स बनाएं– जब भी आप पढ़ने बैठे आप जो भी पढ़ रहे हो साथ–ही–साथ उस टॉपिक का नोट्स भी बनाते चले। इससे आप को रीविजन करने में भी आसानी होगी और आपको पूरा पाठ पढ़ने की भी जरुरत नहीं होगी। जब भी आप नोट्स को पढ़ोगे तो भी आपको बोरियत नहीं होगी और आपको सम्पूर्ण सार एक जगह ही मिल जाएगा। आपको इसे पढ़ते वक्त नींद भी नहीं आएगी।

देर तक पढ़ाई करना– जो भी पाठ काफी देर तक पढ़ते है तो ऐसे में आपको नींद जरुर आएगी तो देर तक पढ़ना भी नींद आने का एक कारण है।

नींद आने पर क्या करें–

एक्सरसाइज करे– जिन लोगों को अधिक नींद आती है उन्हें हर रोज सुबह वज्रासन का अभ्यास करना चाहिये। वज्रासन करने से उन्हें नींद कम आएगी। आप ध्यान भी लगा सकते हैं, ऐसा करने पर आपका मन इधर–उधर नहीं भटकेगा और पढ़ाई में भी मन लगेगा। जब आप अधिक देर से पढ़ रहे हैं और आपको नींद आने लगे तो ऐसे में आप 2 से 3 मिनट के लिए खड़े होकर कोई भी व्यायाम कर सकते हैं। इससे आपकी नींद और आलसपन दूर हो जाएगा और आप फिर पढ़ाई कर सकेंगे।

नींद आने पर चाय–कॉफी पीएं– अगर आप पढ़ने बैठते हो और पढ़ते वक्त थकावट और नींद आना शुरू हो जाये तो ऐसे में कॉफी/चाय लेने से भी आप तरोताजा हो जाते है। कॉफ़ी/चाय पीने से आपकी थकान/आलस्य दूर हो जाएगी और आप फ्रेश महसूस करने लगोगे और जब आप फ्रेश महसूस करने लगोगे तो आपका नींद भी नहीं आएगी। तो कॉफ़ी/चाय पीकर आप पढ़ते वक्त नींद दूर भगा सकते हैं।

नींद आने पर चलते–चलते या बोलकर पढ़े–

अगर बैठ कर पढ़ते–पढ़ते आपको नींद आना शुरू हो जाये तो ऐसे में आप खड़े हो जाये और टहलते हुए पढ़ें। अगर आप अकेले पढ़ते हैं तो बोलकर भी पढ़ सकते हैं, इससे सारा आलस्य दूर हो जायेगा और आपको नींद भी नहीं आएगी।

धारावाहिक
कथा
3

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभा

राजा ने जब तक आँखें खोली तब तक तो सब कुछ सामान्य हो चुका था। राजा ने आँखें फाड़-फाड़कर मूर्ति को देखा, पर मूर्ति पूर्ववत् अब स्थिर थी, न वहाँ आवाज थी और न आँखें चुंधियाँ जाये ऐसा प्रकाश! राजा अपनी संकल्पपूर्ति पर मुस्कुरा उठा। उसका रोम-रोम देवी के प्रति कृतज्ञ हो गया। रानी भी खड़ी हो गयी थी। अपनी श्रद्धा को फलवती होती देखकर उसका भी अंग-अंग आनंद से झूम गया। खुशियों के फूल खिल उठे।

दोनों पति-पत्नी ने देवी को अहोभाव से भरकर नमन किया। आँखों से बहते हर्षाश्रुओं से माँ का पादप्रक्षालन किया और मंदिर से बाहर आ गये!

पूरे राज्य में स्पष्ट तो नहीं पर महल में हो रही दासियों की कानाफूसी से यह खबर फैल ही गयी कि अब महारानी बहुत बदल गयी है। उनकी दिनचर्या बहुत बदल गयी है। पूर्व में तो महारानी कभी कभार किसी त्रुटि अथवा नुकसान पर चिड़चिड़ी भी हो जाती थी पर अब किसी बड़े नुकसान पर भी झल्लाना तो दूर ललाट में बल भी नहीं आने देती। अब तो वह जब भी देखो हँसती मुस्कुराती ही नजर आती है। जरूर कुछ न कुछ कारण बना है।

वैसे यह सच भी था। यद्यपि महारानी स्वाभाविक रूप से कोमल एवं दास दासियों पर दयालु थी, पर कभी-कभी वे अपनी मानसिक वेदना के पलों में बुलाये जाने पर झल्ला भी उठती थी। उनकी वेदना से भी लगभग सभी परिचित थे। उनके साथ नववधु के रूप में आयी लगभग सभी नारियाँ मातृ के पद से सुशोभित हो चुकी थी और वह अभी तक मात्र नारी रूप में ही स्थिर थी।

जिस दिन देवी चामुण्डा द्वारा महाराजा ने पुत्रवान् होने का आशीर्वाद पाया था। उसी दिन से महारानी की खुशियों को पंख लग गये थे। उसे अब अपनी जिंदगी का हर क्षण सार्थक लग रहा था। वह सपने में भी अपनी बगल में सोये बालक को देखने लगी थी। उसकी सारी निराशा भाप बनकर उड़ गई थी। जिंदगी का हर रंग उसे अब गुलाबी और खुशनुमा लग रहा था।

महाराजा भी राजव्यवस्था से बचा हुआ सारा समय महारानी के साथ ही बिताते थे।

मनुष्य आशा के सहारे ही तो जीवन के बदरंगों को भी खूबसूरत बनाकर जी लेता है। आज की तमाम परेशानियों में कल की सुनहरी कल्पना में विस्मृत कर हँस लेता है।

एक रात्रि को महारानी रत्नजटित स्वर्ण पर्यंक पर गाढ़ निद्रा में सो रही थी। पास ही महाराजा भी शयन कर रहे थे। रात्रि का लगभग अंतिम प्रहर चल रहा था, अचानक रानी चौंकी। वह अचरज से भरकर एकदम पर्यंक पर बैठ गयी। उसका मन कल्पनाओं की पंखों पर सवार हो उड़ने लगा। कुछ क्षण तो विचारों में ही वह उलझी रही कि वह क्या करे? गाढ़ निद्रा में सो रहे पति को उठावे या नहीं?

पल दो पल तो वह इस कशमकश में उलझी रही पर अंत में महाराजा के उठने का इंतजार वह कर नहीं पायी। उसने अत्यन्त हौले से महाराजा के पाँव का अंगूठा दबाया। महाराजा तुरन्त ही जाग गये। उन्होंने अचकचाकर आँखें खोली और उनींदी अवस्था में ही बोले- क्या बात है देवी! अभी तो रात्रि अवशेष है।

स्वामीनाथ! रात्रि भले ही बाकी है पर मेरी इच्छापूर्ति का सूर्य उदित हो गया है।

यह सुनते ही महाराजा की भी रही सही नींद गायब हो गयी। तुरंत ही वे उठ बैठे और पूछा-तुम क्या कर रही थी महारानी?

राजन्! मैं एकदम शान्तभावों से रात्रि में सोयी थी। अचानक देखा- एक शेर अपनी कठोर पूँछ पछाड़ता आकाश मार्ग से होकर धीरे-धीरे मेरी ओर आया और देखते ही देखते मेरे उदर में समा गया।

मैंने इस दृश्य को देखने के बाद सोना उचित नहीं समझा। आपको बताये बिना चैन भी नहीं थी इसीलिये आपको उठा दिया। प्रेम भरी निगाहों से पति को देखते ही हुए महारानी ने कहा।

राजा शस्त्रज्ञ होने के साथ-साथ शास्त्रज्ञ भी थे। उन्होंने कलाचार्य के पास गुरुकुल में रहते हुए शस्त्र और शास्त्र दोनों का अध्ययन किया था। शास्त्रों में स्वप्नशास्त्र भी था। महाराजा ने समझ लिया कि देवी का आशीर्वाद फलीभूत हो रहा है।

उनका चेहरा भी खिल गया। सपने का अर्थ उन्हें गुदगुदाने लगा। वर्षों की सुषुप्त आशा पूरी होती नजर आने लगी।

सपने का अर्थ बताते हुए कहा- तुम सिंह जैसे पराक्रमी पुत्र की माता बनोगी। समय पूरा होते ही हमें तुम्हारी कुक्षि से तेजस्वी उत्तराधिकारी की प्राप्ति होगी। और अधिक जानने की जिज्ञासा से राजा ने पूछा- बताओ। वह शेर दिखने में कैसा था?

रानी ने अपने पतिदेव की जिज्ञासा को समझते हुए कहा-स्वामी! वह शेर तेजस्वी जरूर था परन्तु... बोलते-बोलते रानी अटक गयी।

क्या बात है? तुम बोलते-बोलते रुक क्यों गयी?राजा ने विस्मय से पूछा?

जगदेव! मैं आपको क्या कहूँ? कहने में संकोच हो रहा है पर कहे बिना उचित भी नहीं लगता। आपसे छिपाने का पाप मैं कैसे करूँ? उस शेर के पूरे शरीर में जैसे काँटें उगे हुए थे। इस कारण इस सपने से मुझे प्रसन्नता के साथ-साथ पीड़ा भी हो रही है। इसका अर्थ कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी संतान पराक्रमी तो शेर जैसी होगी पर उसका शौर्य जनता को कांटों की चुभन देगा।

सम्राट् भी चिंतित हो गये पर नियति को बदलना देवी के हाथ में भी न था तो मानव की तो बिसात ही क्या? राजा रानी ने स्वयं को भाग्य भरोसे छोड़ दिया। (क्रमशः)

जन सेवा को समर्पित किया आदिनाथ जैन सेवा केन्द्र

आदिनाथ जैन ट्रस्ट चूलै के तत्वावधान में नवनिर्मित आदिनाथ जैन सेवा केन्द्र को जन सेवा में समर्पित कर दिया। चूलै के कंदप्पा मुदली स्ट्रीट में निर्मित इस सेवा केन्द्र का उद्घाटन उपस्थित श्रमण भगवंतों की निश्रा में बाबुलालजी लुम्बचंदजी चौवटिया परिवार द्वारा किया गया।

शासनरत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के विधिविधान व पुण्याहं पुण्याहं के गगनभेदी जयकारों के साथ विशाल जन समुदाय के बीच यह उद्घाटन प्रभु प्रतिमा के प्रवेश के साथ प्रारंभ हुआ।

स्वागत भाषण ट्रस्ट के उपाध्यक्ष मनोज जैन ने दिया, केन्द्र के बारे में मोहन जैन ने 40 वर्ष में हुई शासन प्रभावना का विस्तृत साक्षात्कार कराया। समारोह में अनेक संघों के विविध विशिष्ट महानुभावों ने विभिन्न विंग्स का उद्घाटन किया। चारों सम्प्रदाय के लगभग 30 शहरों से पधारे हुए गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति व श्री संघ की निश्रा में उद्घाटन उत्सव सम्पन्न हुआ। सभी महानुभावों ने उदार हस्त से इस सत्कार्य में तन-मन-धन से योगदान देकर एक कीर्तिमान स्थापित किया।

नंदुरबार में सामायिक मंडल स्थापित

खरतरगच्छाधिपति पू.आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा आज्ञानुवर्तिनी महत्तरापद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म., पू.साध्वी जितेन्द्रश्रीजी म. की सुशिष्या धवलयशस्वी विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 की निश्रा में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. के जन्मोत्सव ता. 25 नवंबर को नंदुरबार संघ में श्रावक सामायिक मंडल की स्थापना की गई। जिसका श्री जिनकुशल सामायिक मंडल नाम रखा गया। हर रविवार दोपहर 3 से 4 बजे सामायिक होगी जिसमें श्रावकों को गुरुवंदन विधि, सामायिक विधि, मंदिर विधि आदि सूत्र सिखाए जाएंगे। इसी क्रम में ता. 2 दिसंबर को श्रावकों ने सामायिक में ज्ञान अर्जन किया।

खरतर
सहस्राब्दी
गौरव वर्ष

खरतरगच्छ की गौरवमयी परम्परा

– हजारीमल बांठिया, कानपुर

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

यदि खरतरगच्छ के संस्थापक पूर्वाचार्यों ने चैत्यवास पर चोट नहीं की होती तो, यह निश्चित था कि जैनधर्म भी बुद्धधर्म की तरह भारत की धरती से लुप्तप्रायः हो जाता। चैत्यवासी परम्परा ने भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को तिलांजलि देकर सुविधाधर्म बना लिया था। अपने तन्त्र–मन्त्र–विद्या के सहारे तत्कालीन राजाओं व मन्त्रियों पर अपना अक्षुण्ण प्रभाव जमा लिया था।

खरतरगच्छ के संस्थापक आचार्य वर्द्धमानसूरि और उनके शिष्य जिनेश्वर सूरि से लेकर जिनपतिसूरि इतने दिग्गज विद्वान हुए जिन्होंने राज–सभाओं में शास्त्रार्थ कर चैत्यवासियों पर विजय प्राप्त की। स्वनामधन्य विद्वान स्व० अगरचन्दजी नाहटा ने ठीक ही लिखा है–

'पाँच सौ–सात सौ वर्षों से जो चैत्यवास ने श्वेताम्बर संप्रदाय में अपना इतना प्रभाव विस्तार कर लिया था, वह जिनेश्वरसूरि से लेकर जिनपतिसूरिजी तक के आचार्यों के जबरदस्त प्रभाव से क्षीण–प्राय हो गया।' अतः सुविहित मार्ग की परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित और चालू रखने में खरतरगच्छ की महान देन है। प्राचीन जैन साहित्य–इतिहास–पुरातत्त्व जो भी वर्तमान में उपलब्ध हैं उसका पचास प्रतिशत भाग खरतरगच्छ के जैन मुनियों, श्रावकों आदि ने रचित किया है। पुरातत्त्वाचार्य स्व० मुनि जिनविजयजी तो खरतरगच्छ के साहित्य से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने निष्पक्ष भाव और मुक्त हृदय से लिखा है–

'खरतरगच्छ में अनेक बड़े–बड़े आचार्य, बड़े–बड़े विद्यानिधि उपाध्याय, बड़े–बड़े प्रतिभाशाली पंडित मुनि और बड़े–बड़े मांत्रिक, तांत्रिक, ज्योतिर्विद्, वैद्यक विशारद आदि कर्मठ यतिजन हुए जिन्होंने अपने समाज की उन्नति, प्रगति और प्रतिष्ठा के बढ़ाने में बड़ा योग दिया है। सामाजिक और साम्प्रदायिक उत्कर्ष के सिवाय खरतरगच्छ अनुयायियों ने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशी भाषा के साहित्य को भी समृद्ध करने में असाधारण उद्यम किया और इसके फलस्वरूप आज हमें भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक आदि विविध विषयों का निरूपण करने वाली छोटी–बड़ी सैकड़ों हजारों पुस्तकें और ग्रन्थ आदि कृतियाँ जैन भंडारों में उपलब्ध हो रही हैं। खरतरगच्छीय विद्वानों द्वारा की हुई यह उपासना न केवल जैन धर्म की दृष्टि से ही महत्व वाली है, अपितु समुच्चय भारतीय संस्कृति के गौरव की दृष्टि से भी उतनी ही महत्ता रखती है।'

"साहित्योपासना की दृष्टि से खरतरगच्छ के विद्वान मुनि बड़े उदारचेता मालूम देते हैं। इस विषय में उनकी उपासना का क्षेत्र, केवल अपने धर्म या संप्रदाय की बाड़ से बद्ध नहीं है। वे जैन और जैनेतर वाङ्मय का समान भाव से अध्ययन–अध्यापन करते रहे हैं। व्याकरण, काव्य, कोष, छन्द, अलंकार, नाटक, ज्योतिष, वैद्यक और दर्शनशास्त्र तक के अगणित अजैन ग्रन्थों पर उन्होंने अपनी पांडित्यपूर्ण टीकाएँ आदि रचकर तत्तद् ग्रन्थों और विषयों के अध्ययन कार्य में बड़ा उपयुक्त साहित्य तैयार किया है।"

खरतरगच्छ के गौरव को प्रदर्शित करने वाली ये सब बातें मैं यहाँ पर बहुत ही संक्षेप रूप में केवल सूत्र रूप से ही उल्लेखित कर रहा हूँ।

खरतरगच्छ में योग–अध्यात्म की अनूठी परम्परा रही है। योगीराज आनन्दघनजी, चिदानन्दजी, श्रीमद् देवचन्द्रजी, मस्तयोगी ज्ञानसारजी (नारायण बाबा), अध्यात्मयोगी सहजानन्दघनजी आदि इसी परंपरा में हुए हैं।

जैनतीर्थों शत्रुंजय, गिरनार, कापरड़ा, नाकोड़ा और उत्तर–पूर्व भारत में दिल्ली से लेकर गौहाटी तक सभी कल्याणक तीर्थ या मन्दिर की सुरक्षा–व्यवस्था खरतरगच्छ के आचार्यों व मुनियों की देन हैं। इनके निर्माण व जीर्णोद्धार में इसी गच्छ के मुनियों व श्रावकों ने योगदान दिया है। संक्षिप्त में यूं कहा जावे–चौबीसों तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों को तीर्थरूप देने में इसी

गच्छ के आचार्यों व मुनियों की सुझ–बुझ थी।

सही मायनों में "युगप्रधान" शब्द को सार्थक करने वाले चारों दादा इसी गच्छ की परम्परा के हैं। जिनके नाम की माला समस्त जैन व अनेक जैनेतर प्रतिदिन जपते हैं। समस्त भारत में जहाँ भी श्वेताम्बर जैनों के घर हैं, वहां जैन दादावाड़ियाँ बनी हुई हैं जो आज करोड़ों–अरबों की जैन–सम्पत्ति है। इसी "युगप्रधान" शब्द व ''दादावाड़ी" का चमत्कार देखकर अन्य जैन समाज भी इन्हीं दोनों का प्रयोग कर अपने को धन्य मान रही है।

नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि की आगम टीकाएँ, उपाध्याय जयसोम की "युगप्रधानाचार्य गुर्वावली", आचार्य श्री जिनप्रभसूरि का "विविध तीर्थ कल्प", आचार्य अभयदेवसूरि का "जयन्तविजय महाकाव्य", श्री जिनचन्द्रसूरि की 'संवेग रंगशाला", महाकवि समयसुन्दर की "अष्ट लक्षी" आदि ग्रन्थ विश्व साहित्य के अजोड़ ग्रन्थ हैं। अध्यात्मयोगी आनन्दघनजी के चौबीसी और पद तो अपने आप में अनूठे हैं ही।

खरतरगच्छ के श्रावक–श्राविकाओं ने अनेक धर्मकार्य किये, मन्दिर–मूर्तियाँ बनाई, तीर्थों के जीर्णोद्धार करवाये, हजारों हस्तलिखित प्रतियाँ लिखवाई आदि विविध धर्म प्रभावना के कार्य किये। उनका अपना महत्व है।

संघपति सोमजी शाह, नर–रतन सेठ, मोतीचन्द नाहटा, मन्त्रीश्वर कर्मचन्द बच्छावत, दीवान अमरचन्द सुराणा, देशभक्त अमरशहीद अमरचन्द बांठिया, सर सिरेमल बाफना, जगत–सेठ परिवार की माणकदेवी, राक्याण परिवार के राजा भारमल आदि अनेक श्रावक–श्राविकाएँ हुई हैं जिन्होंने जैनशासन की अनुपम सेवा की है।

विद्वान श्रावकों में इस युग में स्व० अगरचन्दजी नाहटा का अकेला ही ऐसा नाम है जिन्होंने अपनी पचास वर्ष की साहित्य साधना से माँ भारती के ज्ञानभंडार को अनुपम ज्ञान–रत्नों से भर दिया और विश्व के महान–पुरुषों के सन्दर्भ कोष में उनका नाम आदर से जुड़ गया, जो अमेरिका से प्रकाशित हुआ है।

–(प्रवर्तिनी सज्जनश्रीजी अभिनंदन ग्रंथ 'श्रमणी' से आंशिक संशोधन सहित साभार)

जिनहरि विहार में ध्वजारोहण संपन्न

विश्व विख्यात श्री पालीताणा तीर्थ स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला के श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित मयूर मंदिर का 15वां वार्षिक ध्वजारोहण का कार्यक्रम दि. 21 नवंबर 2018 को आनन्द व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी जैन परिवार द्वारा जिनमंदिर पर ध्वजा चढाई गई। प्रातः अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। सतरह भेदी पूजा पढाई गई। यह समारोह पूज्य मुनिवर श्री पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. एवं पू. साध्वी विशालप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, कोषाध्यक्ष मेहता पुखराजजी तातेड, रतनलालजी बोथरा, भेरुभाई लूणिया, धर्मचंदजी बोहरा, धर्मचंदजी चौरडिया, विपुलभाई आदि अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 2059 कार्तिक सुदि 13 को पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. (तत्कालीन उपाध्याय) की निश्रा में संपन्न हुई थी।

– भागीरथ शर्मा, प्रबंधक–जिनहरि विहार

मुमुक्षु कुमारी अंशु देशलहरा की दीक्षा ता. 18 फरवरी को

इन्दौर 17 नवंबर। नारायणपुर निवासी कुमारी अंशु देशलहरा की भागवती दीक्षा उज्जैन नगर में प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर ता. 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

पिता श्री युधिष्ठिरजी, माता सौ. श्रीमती कल्पनादेवी की सुपुत्री 23 वर्षीया कुमारी अंशु देशलहरा ने पूजनीया प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. एवं पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या बनेगी।

देशलहरा परिवार ता. 17 नवम्बर को इन्दौर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में उपस्थित हुआ। सकल श्री संघ के समक्ष उन्होंने कुमारी अंशु की भागवती दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने 18 फरवरी 2019 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने चारित्र की महिमा समझाई। उन्होंने कहा– कुमारी अंशु पिछले तीन वर्षों में बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सन्निधि में चारित्र–शिक्षा ग्रहण कर रही है। इसका शांत स्वभाव अनुमोदनीय है। विपरीत परिस्थितियों में भी इसने अपने मन को समाधि भाव में स्थित रखा।

कुमारी अंशु ने अपने भाव प्रस्तुत करते हुए कहा– मेरा स्वास्थ्य खराब था। पूज्याश्री के सानिध्य को पाकर मैं स्वस्थ हो गई। उसने अपने बचपन के संस्मरण सुनाये। दादा–दादी, माता–पिता आदि अपने पूरे परिवार का उपकार माना कि उन्होंने अपने मोह का त्याग कर संयम की अनुमति प्रदान की।

मुहूर्त्त की घोषणा होते ही सकल श्री संघ में आनंद की लहर व्याप्त हो गई।

इन्दौर से उज्जैन संघ का आयोजन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में इन्दौर से श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ उज्जैन के लिये चार दिवसीय छह री पालित पद यात्रा संघ आयोजित होगा।

कार्तिक शुक्ल दूज को नूतन वर्ष मांगलिक आयोजन के दिन श्रीमती मदनबाई मदनलालजी बैद परिवार ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए पूज्यश्री से संघ के लिये शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। यह संघ ता. 30 जनवरी 2019 को रामबाग दादावाडी से रवाना होकर सांवेर होता हुआ ता. 2 फरवरी 2019 को श्री अवन्ति तीर्थ प्रवेश करेगा। उसी दिन संघमाला का आयोजन होगा।

इन्दौर प्रतिष्ठा की जाजम संपन्न

इन्दौर 18 नवंबर। इन्दौर नगर में रामबाग दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में 18 जनवरी 2019 को संपन्न होने जा रही है।

प्रतिष्ठा संबंधी जाजम का शुभ मुहूर्त्त पूज्यश्री की पावन निश्रा में ता. 18 नवम्बर को किया गया। जिसमें फलेचुन्दडी, नौकारसियों, पूजाओं, प्रतिमाजी भराने व बिराजमान करने, पट्ट स्थापित करने, बहुमान आदि के चढावे बोले गये। चढावे ऐतिहासिक हुए। चढावे बोलने के लिये सिरोही निवासी शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण पधारे थे।

39वीं ओली का पारणा संपन्न

फलोदी 13 नवंबर। पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के वर्धमान तप की 39वीं ओली की तपस्या का पारणा 13 नवंबर 2018 को फलोदी संपन्न हुआ।

आपके सुदीर्घ तपश्चर्या की अनुमोदना सह सुखशाता की मंगल कामना करते है।

चातुर्मास परिवर्तन

इन्दौर 23 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. और पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास परिवर्तन श्री हस्तीमलजी राजकुमारजी मोहनसिंहजी लालन परिवार के निवास स्थान पर हुआ।

कार्तिक पूर्णिमा के मंगल प्रभात में कार्तिक पूर्णिमा की विधि करने के पश्चात् सकल श्री संघ के साथ लालन परिवार के निवास स्थान पर पधारे। जहाँ लालन परिवार की ओर से सकल श्री संघ के नाश्ता का लाभ लिया गया।

तत्पश्चात् पूज्यश्री का सिद्धाचल की महिमा पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। उन्होंने सिद्धाचल तीर्थ के साथ खरतरगच्छ के संबंध का इतिहास सुनाया। उन्होंने कहा– दादा जिनकुशलसूरि की प्रेरणा से 14वीं शताब्दी में खरतरवसही का निर्माण किया गया था। यह खरतरवसही शांतिनाथ मंदिर के बाद बायीं ओर जो जिनमंदिरों की शृंखला है, वही है। यह उल्लेख शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी द्वारा प्रकाशित इतिहास की पुस्तक में भी अंकित है।

उन्होंने कहा– आचार्य जिनप्रभसूरि जो विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में हुए, वे जब बादशाह मोहम्मद तुगलक के साथ सिद्धाचल के दरबार में पधारे थे, तब बादशाह द्वारा रायण वृक्ष को मोतियों से बधाने पर दूध की वर्षा हुई थी, जिसे देख कर बादशाह दंग रह गया था।

चौथे दादा जिनचन्द्रसूरि ने दादा जिनदत्तसूरि व जिनकुशलसूरि के चरणों की स्थापना की थी। उनके प्रशिष्य आचार्य जिनराजसूरि ने खरतरवसही अपर नाम शेठ सवा सोमा की टूंक की प्रतिष्ठा कराई थी। जिसे वर्तमान में चौमुखजी टूंक कहा जाता है। श्रीमद् देवचन्द्रजी म. ने यहाँ कई प्रतिष्ठाऐं करवाई थी। उन्होंने ही आनंदजी कल्याणजी पेढी की स्थापना की थी।

शेठ मोतीशा की टूंक खरतरगच्छ के ही सुश्रावक शेठ मोतीशा द्वारा निर्मित है। महो. श्री क्षमाकल्याणजी म. ने 19वीं शताब्दी में बंद हुई शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा प्रारंभ करवाई थी। अंगारशा पीर के उपद्रव को उन्होंने मंत्र बल से शांत किया था।

प्रवचन के पश्चात् लालन परिवार की ओर से कामली अर्पण की गई। उल्लेखनीय है कि 24 वर्ष पूर्व हुए चातुर्मास परिवर्तन का लाभ भी इसी परिवार ने लिया था।

महासंघ की ओर से कामली अर्पण

इन्दौर 23 नवंबर। कार्तिक पूर्णिमा के मंगल प्रभात में चातुर्मास परिवर्तन की वेला में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ के अध्यक्ष श्री रिखबचंदजी झाड़चूर, महामंत्री श्री रुमिल डी. बोहरा, सहमंत्री श्री धर्मेन्द्र मेहता, कोषाध्यक्ष श्री बाबुलालजी छाजेड, अनिलजी पारख, राजेन्द्रजी नाहर, निर्मलजी ठाकुरिया, नरेन्द्रजी बाफना, प्रकाशजी मालू, डुंगरचंदजी हुंडिया, छगनलालजी हुंडिया, जितेंद्रजी शेखावत व अन्य सदस्यों ने उपस्थित होकर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का अभिनंदन करते हुए कामली अर्पण की।

इस अवसर पर सहमंत्री धर्मेन्द्र मेहता ने कहा– आपश्री के गणाधीश पद समारोह के अवसर पर सिंधनूर में महासंघ ने कामली अर्पण की थी। आपश्री के आचार्य पद के अवसर पर आपश्री को कामली अर्पण करने का सौभाग्य हमें प्राप्त नहीं हो सका। अतः आज हम आपश्री को कामली अर्पण करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा– आपश्री समयज्ञ हैं, शास्त्रज्ञ हैं, निश्चित ही आपश्री के नेतृत्व में गच्छ दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करेगा। पूज्यश्री ने कामली स्वीकार करते हुए कहा– हम सभी को हिल–मिल कर गच्छ में पूर्ण रूप से अनुशासन, मर्यादा के साथ एकता का वातावरण निर्मित करना चाहिये ताकि आचार्य जिनेश्वरसूरि द्वारा स्थापित व दादा गुरुदेवों द्वारा सिंचित यह खरतरगच्छ साधना–आराधना आदि हर क्षेत्र में प्रगति के पथ पर आगे बढे।

जन्मदिन निमित्ते जिनस्नात्र महोत्सव

भुज 14 नवंबर। कच्छ के भुज में सुप्रसिद्ध श्री भीमासेठ के 80जन्मदिन निमित्ते भगवान संभवनाथ का स्नात्र महोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीजिनमणिप्रभसूरीश्वरजी.म.सा की आज्ञानुवर्तिनी पू. स्नेहसुरभि साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की निश्रा में नंदुरबार से पधारे श्रीमान शा. भीमराजजी कवाड़ का 80वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में परमात्मा संभवनाथ भगवान का स्नात्र महोत्सव मनाया गया!

इसी समारोह में तपागच्छाचार्यश्री एवं साधु, साध्वी भगवंत एवं नंदुरबार नगर से पधारे कवाड़ परिवार से 50 अतिथि गण एवं भुज नगर के सामायिक मंडल, बहु मंडल की महिलाओं द्वारा स्नात्र पूजा पढ़ाई गई! बहु मंडल द्वारा 14 महास्वपनों को लेकर सुंदर नृत्य किया गया! छोटी बालिकाओं के द्वारा भी भव्य नृत्य किया गया उसके बाद मुमुक्षु डिम्पल एवं भूमि द्वारा संवाद प्रस्तुति दी गई! भक्ती में खुशी के साथ नाचते झूमते तालियों के साथ आराधना भवन गूंज उठा! नंदुरबार के अंदर शा. भीमराजजी कवाड़ को भीमा सेठ के नाम से पुकारा जाता है! बड़े ही दानवीर उद्धार हृदय के है। 20 साल तक नंदुरबार संघ के अध्यक्ष पद बने रहे।

इसके बाद श्री भुज खरतरगच्छ जैन संघ के द्वारा दानवीर भीमा सेठ का बहुमान किया गया एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. बकुलादेवी का भी बहुमान किया!

प्रेषक–प्रकाश चौहान

अवन्ति तीर्थ की जाजम पर बोलियों ने कीर्तिमान बनाया

अतिप्राचीन श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वियों की पावन निश्रा में 18 फरवरी 2019 को संपन्न होने जा रही है।

इस प्रतिष्ठा की जाजम का शुभ मुहूर्त्त पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में ता. 2 दिसम्बर 2019 को किया गया। जाजम बिछाने का सौभाग्य श्री गेंदमलजी पुखराजजी शेषमलजी चौपडा परिवार ने प्राप्त किया। उनके घर पर 1 दिसम्बर की रात जाजम–भक्ति का भव्य आयोजन किया गया।

ता. 2 को शुभ मुहूर्त्त में भव्य वरघोडे के साथ जाजम लाई गई। परमात्मा अवन्ति प्रभु के दरबार में मंत्रोच्चारण के साथ जाजम बिछाई गई।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने अवन्ति का इतिहास बताते हुए इस प्रतिष्ठा में पूर्ण रूप से सहभागी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

सुप्रसिद्ध संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता ने अपनी अनोखी शैली में बोलियाँ बोली। बोलियों का कीर्तिमान बना। कल्पना व आशा से कई गुणा बोलियों का वातावरण बना। फलेचुन्दडी का लाभ श्री नरेन्द्रजी चंद्रशेखरजी अनिलजी डागा परिवार ने लिया। माता–पिता बनने का अनूठा लाभ सिवाना अहमदाबाद निवासी संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली परिवार ने लिया। जयजिनेन्द्र का लाभ अवन्ति तीर्थ के अध्यक्ष श्री हीराचंदजी छाजेड परिवार ने लिया।

बोलियों में उज्जैन निवासियों ने अपनी पूर्ण भागीदारी निभाई। विशेष रूप से तीर्थ की व्यवस्था देख रहे मूर्तिपूजक मारवाडी समाज ने बढ–चढ कर लाभ लिया।

इस अवसर पर अवन्ति तीर्थ के प्रवेश द्वार के लाभार्थी के नाम की घोषणा की गई। इस प्रवेश द्वार का लाभ पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से श्री टीकमचंदजी जीतमलजी सकलेचा की स्मृति में श्रीमती शांताबाई पुत्र निर्मलकुमारजी श्रीपालकुमारजी अर्पित वंदित सकलेचा परिवार ने लिया।

श्रीसंघ द्वारा सकलेचा परिवार की अनुमोदना की गई।

इस वातावरण के निर्माण में प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक संघवी कुशलराजजी गुलेच्छा की बहुत मेहनत रही।

इस प्रतिष्ठा के साथ साथ ता. 18 को ही दो भागवती दीक्षाऐं संपन्न होगी। जोधपुर निवासी मुमुक्षु शुभम् कुमार लूंकड एवं नारायणपुर छत्तीसगढ निवासी कुमारी अंशु देशलहरा संयम ग्रहण करेंगे। मुमुक्षु शुभम् पूज्य आचार्यश्री के एवं मुमुक्षु अंशु पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के चरणों में अपना जीवन समर्पण करेंगे।

खरतरगच्छ उद्भव स्थली पाटण में भवन निर्माण कार्य अतिशीघ्र प्रारम्भ

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के पदाधिकारियों की मीटिंग 11 नवम्बर को चेन्नई में सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित निर्णय लिये गये–

1. पाटण मे गत वर्ष अधिग्रहित भूमि पर निर्माण प्रारम्भ करने हेतु विचार विमर्श किया गया। इसी मास निर्माण कार्य प्रारंभ किये जाने का निर्णय लिया गया।
2. विहार धाम निर्माण कार्य हेतु पेढ़ी एवं केयूप की सामूहिक समिति का गठन किया गया। यह समिति अगले दो महीनों में सभी क्षेत्रों की समीक्षा करके कार्य को आगे बढ़ाएगी।
3. चतुर्थ दादा गुरुदेव की जन्म स्थली खेतासर मे मंदिर एवं दादावाड़ी का निर्माण कार्य की जानकारी दी गई। सदस्यों ने कार्य की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।
4. पेढ़ी के 31. 3. 2018 के इनकम टैक्स रिटर्न एवं हिसाब की ताजा परिस्थिति पर विचार विमर्श किया गया। पेढ़ी के कार्यकारिणी की मीटिंग 07 जनवरी 2019 को अहमदाबाद में बुलाई जाएगी।

– महामंत्री पदम टाटिया

तिरुपुर में पंचान्हिका महोत्सव

तिरुपुर। होजरी सिटी तिरुपुर की धर्मधरा पर पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री साध्वी प्रवरा हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्यायें पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में चातुर्मास की आराधना धूमधाम से चली।

दीपावली पर्व की आराधना के पश्चात् पार्श्व कुशल जैन सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में हेमप्रभाश्रीजी आराधना भवन में पू. तपाराधिका साध्वी योगांजनाश्रीजी म. एवं संवेगप्रियाश्रीजी म. के छः मासी तप एवं संघ में विविध तपश्चर्या के आराधनार्थ निमित्ते पंचान्हिका एवं भव्यातिभव्य उद्यापन महोत्सव का आयोजन किया गया।

आयोजन के अन्तर्गत प्रथम दिवस में पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, द्वितीय दिवस को अर्हत् अभिषेक, तृतीय दिवस को उवसग्गहरं महापूजन, चतुर्थ दिवस को संयम तप वंदनावली एवं पंचम दिवस को दादा गुरुदेव की पूजा एवं महिला सांझी आदि संघ एवं दोनों म.सा. के परिवार वालों की तरफ से आयोजित किया गया।

पंडितवर्य श्री अश्विनभाई बैंगलोर के द्वारा पूजन पढ़ाने का ठाठ लगाया गया और उसके मर्म को समझाया गया उसे देखकर तिरुपुर वासी झूम उठे। संयम तप वंदनावली चैन्नई के शासनरसिक सुरेशजी जैन के द्वारा संयम जीवन की व्याख्या एवं लघु जीवन की महत्ता बताते हुए सभी दर्शकों को भावविभोर कर दिया उनकी अनुमोदना करते सभी की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

तपाभिनंदन मे पू. शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. द्वारा तप का मर्म, महिमा एवं महत्व को बताते हुए कहा कि तप संयम जीवन को कुंदन की तरह निखारता है और आसक्ति को कम करता है। तपाभिनंदन में साध्वीवर्याओं के द्वारा भी गीतिका के माध्यम से अभिनंदन किया गया। तप का अनुमोदन करने पधारे मोकलसर, बालोतरा, सूरत, अहमदाबाद, बैंगलोर, तिरछी, कोयम्बतूर, ईरोड, चैन्नई आदि क्षेत्रों से एवं तिरुपुर संघ के विशिष्ट व्यक्तियों एवं संघ सदस्यों के द्वारा अपने वक्तव्य से तप का अभिनंदन किया गया। महिला मंडल के द्वारा गीतिका एवं महिला सांझी, शासन गीत के द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अरविंदजी कोठारी बैंगलोर एवं दिनेशजी बोथरा के द्वारा किया गया।

स्वर्णनगरी जैसलमेर तीर्थ पर ध्वजारोहण सम्पन्न

जैसलमेर 12 नवंबर। पू. प्रखर व्याख्यात्री साध्वी हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से गतवर्ष साध्वी विनीतयशाश्रीजी आदि ठाणा की चातुर्मासिक निश्रा में विश्वविख्यात स्वर्णनगरी जैसलमेर दुर्ग पर स्थित जिनालयों की ध्वजा का लाभ लिया गया था। उसका क्रियान्वयन दि. 12 नवम्बर 2018 को चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के पावन चरणों में अनुभव स्मारक संस्थान के सदस्यों एवं गुरुभक्तों द्वारा 2 दिवसीय यात्राप्रवास अठारह अभिषेक एवं ध्वजा महोत्सव हेतु धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में गुरुभक्तों के अलावा भी कई लोग पधारे। स्वामीवात्सल्य का सम्पूर्ण लाभ अनुभव स्मारक ट्रस्ट के गुरुभक्तों द्वारा लिया गया। इस अवसर पर जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी ने जैसलमेर ट्रस्ट मण्डल, समागत अतिथियों एवं यात्रियों का अभिवादन किया। ध्वजा समारोह में जगदीश बोथरा, सुरेश भंसाली, प्रमोद भंसाली, भूरचन्द मालू, रमेश छाजेड़, अरविन्द छाजेड़, पवन भंसाली, सम्पतराज संकलेचा आदि कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

— जगदीशचन्द भंसाली, सचिव

केएमपी द्वारा विशाल धार्मिक प्रदर्शनी का आयोजन

इन्दौर 18 नवंबर। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा व पू. महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म.सा. एवं पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के कृतज्ञता ज्ञापन के उपलक्ष में 18 नवम्बर को अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परीषद इन्दौर शाखा के अंतर्गत विशाल धार्मिक प्रदर्शनी जिसमें (1) जैन तत्वज्ञान (2) वास्तु ज्ञान (3) नरक व देवलोक की झलक (4) ध्यान साधना (5) जैन व्यंजन बनाना (6) आकर्षक व मनोरंजक गेम्स का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में महावीर बाग एवं गुमाश्ता नगर के ज्ञानवाटिका के बालक–बालिकाओं ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। जिनमें खुशी सकलेचा, आदित्य सकलेचा, आगम पारख, ध्वजा पारख आकांशी पटवा, देशना जैन, परी गोलछा, मेरुशी लालन, कश्वी लालन, खुशी शाह, देशना जैन, महीप श्रीमाल, आर्णव जैप, समृद्धि पटवा, आरव नाहर, समृद्धि जैन ने प्रदर्शनी, भजन तथा अपने उद्‌गारों से पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपतिश्री के चरणों में कृतज्ञता ज्ञापन किया।

जैन तीर्थ बलाड का पैदल यात्रा संघ सम्पन्न

ब्यावर 25 नवंबर। श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में गणाधीश श्री विनयकुशलमुनिजी म. आदि ठाणा एवं साध्वी विरतीयशाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में आदिनाथ जैन तीर्थ, बलाड का पैदल यात्रा संघ का आयोजन भगवान के रथ के साथ शांतिनाथ जैन मंदिर से प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर बलाड पहुंचकर दर्शन वंदन के पश्चात् जैन जगत के तीसरे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. के 738वीं जयंति मनाई गई। उसके पश्चात् पू. विनयकुशलमुनिजी म. का विदाई समारोह मनाया गया।

अहमदाबाद केयुप और केएमपी

अहमदाबाद 29 नवंबर। परम पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 33वीं पुण्यतिथि निमित्ते अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् अहमदाबाद शाखा और अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद अहमदाबाद शाखा द्वारा शाहीबाग स्थित गिरधर नगर जिन मंदिर में परमात्मा की भक्ति व दादा गुरुदेव की पूजा आयोजित की गई।

सड़क दुर्घटना में साध्वीजी का कालधर्म

चित्रोड 29 नवंबर। वागड़ समुदाय के साध्वी पूज्या श्री प्रसन्नहृदयाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या श्री पूर्णश्रद्धाश्रीजी म.सा. (उम्र 34 वर्ष) लाकड़िया –चित्रोड के बीच सड़क दुर्घटना में कालधर्म को प्राप्त हुए है। दिवंगत को सादर श्रद्धांजलि अर्पण करते है।

लेवड़ा गोशाला में गायों को हरी घास खिलाई गई

नीमच 29 नवंबर। परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच शाखा द्वारा पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की 33वीं पुण्यतिथि पर दोपहर 2:30 बजे लेवड़ा गोशाला जाकर गायों को हरी घास परिषद् के वरिष्ठ सदस्य श्री कमलेशजी गोपावत के सौजन्य से खिलाई गयी।

–अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच

दादा गुरुदेव के अवतरण दिवस पर गुरु इकतीसा पाठ किया

नीमच 25 नवंबर। परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री आदिनाथ जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि खरतरगच्छ जैन दादावाड़ी स्पेंटा पेट्रोल पंप के पास नीमच पर अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच शाखा द्वारा शाम को 7.00 से 8.00 बजे तक दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की 738वीं जन्म जयंती के पावन अवसर पर सामूहिक दादा गुरुदेव के इकतीसा का जाप किया गया।

इस अवसर पर दादावाड़ी में बड़ी संख्या में समाज के वरिष्ठ जन उपस्थित थे। इकतीसा के पाठ के बाद दादा गुरुदेव की 108 दीपक की आरती की गई। आरती के बाद सभी उपस्थित जनों को प्रभावना लाभार्थी विनोदजी कोठारी एवं सुनीलजी गोपावत परिवार द्वारा की गई।

कार्यक्रम में समय से पांच मिनिट पहले आने वाले प्रथम पांच भाग्यशालीयों को युवा परिषद द्वारा पुरस्कृत किया गया।

—अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद नीमच

युगप्रभावक की पुण्यतिथि दिवस पर आयोजन

इचलकरंजी 2 दिसंबर। पूज्य प्रज्ञापुरूष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की पुण्यतिथि दिवस निमित्त अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद इचलकरंजी शाखा द्वारा 'डॉ.हेडगेवार रुग्णालय' (सेवाभारती अस्पताल) में मरीजों को अल्पाहार करवाकर मानव सेवा का कार्य किया गया। इस अवसर पर कार्यकारिणी एवं सहयोगी सदस्य उपस्थित रहे।

पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि का आयोजन

गुवाहाटी 29 नवंबर। श्री जैन श्वेतांबर मंदिरमार्गी संघ, चातुर्मास समिति गुवाहाटी के तत्वावधान में गुवाहाटी नगर में पू. युगप्रभावक आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी जी म.सा. की 33वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा की रचित श्री जिनकान्तिसागरसूरि गुरुपद पूजा पढ़ाई गई।

पू. गणिनीपद विभूषिता सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में श्री गुलाबचंदजी नरेशचंदजी कोठारी परिवार ने पूजा का लाभ लिया।

ता. 26 नवम्बर को प्रातः 6.30 बजे से गुरु इकतीसा जाप लाभार्थी श्री प्रसन्नचन्दजी, रविन्द्रकुमारजी डागा। ता. 27 को सामूहिक गुप्त एकासणा। ता. 28 को सामूहिक सामायिक में नवकार जाप श्री तिलोकचंदजी खजांची एवं पदमचंदजी बैगानी परिवार द्वारा।

ता. 2 दिसंबर को मालीगांव गौशाला में गौ वात्सल्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहां अल्पाहार का लाभ श्री राजेन्द्रजी डाकलिया एवं पदमजी बैंगानी परिवार ने लिया।

ब्यावर 29 नवंबर। ब्यावर श्रीसंघ के अनंत उपकारी, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ नवयुवक मंडल की स्थापना के प्रेरणादाता पू. प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. की पुण्यतिथि के उपलक्ष में पू. गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनिजी म. की पावन प्रेरणा से दिनांक 2 दिसम्बर को प्रातः 11.15 बजे बिचडली तालाब की पाल पर स्थित श्री महावीर अन्न क्षेत्र में जरुरतमंदों को भोजन कराया गया।

मुमुक्षु शुभम लुंकड व मुमुक्षु अंशु देशलहरा का स्थान-स्थान पर अभिनंदन

इन्दौर 28 अक्टुंबर। मुमुक्षु शुभम लुंकड के दीक्षा मुहूर्त्त की उद्घोषणा के पश्चात् अनेक स्थानों पर अभिनंदन एवं चारित्र के भावों की अनुमोदना हो रही है। नंदुरबार, शहादा, भुज, अंजार, मुंबई, बालोतरा, बीकानेर, नागौर, बाडमेर, हालोल इत्यादि स्थानों पर वर्षीदान शोभायात्रा एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किये गए। स्थानीय श्रीसंघ एवं केयुप शाखा एवं केएमपी शाखाओं के साथ स्थानीय मंडल अभिनंदन समारोह को यादगार बनाने के लिए अनुमोदनीय पुरुषार्थ कर रहे है।

बाडमेर 19 नवंबर। बाड़मेर शहर में आज एक साथ पांच मुमुक्षु जिनमें शुभम लुंकड, सुमित मेहता, अंशु देशलहरा, स्वीटी खजांची व सुरभि खजांची का भव्य वरघोड़ा सुखसागर नगर से परम पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में सैकड़ों श्रावक–श्राविकाओं की उपस्थिति में प्रस्थित हुआ जो शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ कुशल–कांति–मणि प्रवचन वाटिका पहुंचा। जहाँ धर्म सभा का आयोजन हुआ।

भव्य वरघोड़े में आचार्य श्री कवीन्द्रसागरसूरिजी म.सा. व साध्वी सुरंजनाश्रीजी म. का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। रथ में विराजित दीक्षार्थी हाथ जोड़कर सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। शहर में हर जगह उनका अभिनंदन व स्वागत हेतु सैकड़ों श्रावक–श्राविकाएँ चावल व पुष्पों से बधा रहे थे।

अभिनंदन समारोह में सर्वप्रथम सामुहिक गुरु वंदन से प्रारम्भ हुआ। उसके बाद मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभी मुमुक्षुओं का चातुर्मास समिति द्वारा तिलक, माला, साफा, चुण्दड़ी, अभिनंदन पत्र भेंट कर अभिनंदन किया गया। उपस्थित सैकड़ों श्रावक–श्राविकाओं द्वारा ''दीक्षार्थी – अमर रहें, दीक्षार्थी नो जय–जय कार, दीक्षा लेने वालों को धन्यवाद–धन्यवाद'' आदि जयकारों से पांडाल को गुंजायमान कर दीक्षार्थियों का अभिनंदन किया।

पूज्य विपुल साहित्य सर्जक मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा– संयम जीवन का सुख अप्रतिम है। जिस सुख का अनुभव एक संसारी जीव करोड़ों रूपये कमाकर, अनेकों प्रयत्न करके भी नहीं कर पाता उससे कई गुणा सुख का अनुभव संयमी जीव संयम के भावों में रमण करते हुए करता है। साध्वी सिद्धांजनाश्रीजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सभी मुमुक्षुओं ने संयम जीवन के भावों को प्रकट करते हुए अपने अनुभव एवं विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में मुमुक्षु रजत सेठिया व अमित बाफना का भी बहुमान किया गया। कार्यक्रम के अंत में दीक्षार्थियों ने वर्षीदान किया। कार्यक्रम का संचालन चार्तुमास समिति के महामंत्री केवलचंद छाजेड़ ने किया।

अक्कलकुवा 3 नवंबर। अक्कलकुवा नगर में मुमुक्षु शुभमजी लुंकड़ जिनकी दीक्षा 18 फरवरी 2019 को उज्जैन में होने वाली है और साथ आये श्री अमितजी जिनकी दीक्षा की तारीख जल्द ही मिलने वाली है, का अक्कलकुवा श्रीसंघ द्वारा अभिनदंन समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुमुक्षु भाई के अनुमोदना निमित्त राकेश बोहरा, शुभम भंसाली, सौ. अनिता गुलेच्छा ने अभिनंदन के भाव रखे। साथ ही श्री वासुपूज्य महिला मंडल, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद द्वारा गीत प्रस्तुत करते हुए श्री संघ के द्वारा मुमुक्षु भाई का अभिनदंन किया गया।

शहादा 30 अक्टुंबर। शहादा नगर में चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनी चंपाकली गच्छगणिनी मारवाड़ ज्योती सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. तथा स्नेहसुरभि पूर्णप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्ती साध्वी हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदी ठाणा 5 के पावन सानिध्य में प्रभु महावीर

स्वामी की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र का विवेचन प्रवचन हॉल में हुआ।

इसी बीच मुमुक्षु भाई शुभम लुंकड जोधपुर निवासी का प्रथम वर्षीदान वरघोडा शहादा श्रीसंघ को मिला। दिनांक 30 अक्टुंबर को भाई शुभम का प्रथम वर्षीदान वरघोडा शहादा के श्री कुंथुनाथ जिनालय से आरंभ होकर मुख्य गलियों से श्री सुघोषाघंट मंदिर एवं दादावाडी में पूर्ण हुआ।

वरघोडे पश्चात् भाई शुभम का अभिनंदन समारोह दादावाडी के प्रवचन मंडप में हुआ। साध्वीवर्या ने संयमी जीवन की महत्ता को विवेचन में समझाया। पश्चात् मुमुक्षु शुभम ने संसार की असारता को बताते हुए स्वानुभव बताएं। शहादा श्रीसंघ तथा खरतरगच्छ युवा परिषद शहादा शाखा द्वारा भाई शुभम का अभिनंदन समारोह सम्पन्न हुआ। संध्या में सांझी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें शुभम के जीवन का संपूर्ण विवरण नाटिका द्वारा हुआ।

बालोतरा 21 नवंबर। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी नीलांजनाश्रीजी म. आदि की निश्रा में बालोतरा नगर में दीक्षार्थी शुभम लुंकड़ व अंशु देशलहरा का वर्षीदान वरघोड़ा हुआ। श्री विमलनाथ मंदिरजी से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए जुनाकोट में धर्मसभा मे परिवर्तित हुआ। वरघोड़े में बालोतरा नगर का जनसैलाब उमड़ पड़ा।

विशिष्ट वक्ताओं ने दीक्षार्थिओं को अपनी शुभकामना प्रदान की। श्री संघ बालोतरा द्वारा मुमुक्षुओं का अभिनंदन करते हुए प्रशस्ति पत्र भेंट किया। मुमुक्षु शुभम लुंकड़ व अंजू देशलहरा ने अपना उद्‌बोधन देते हुए संयम जीवन की महत्ता बताई व 18 फरवरी को उज्जैन प्रतिष्ठा व दीक्षा के अवसर पर पधारने की विनती की। अंत में साध्वी नीलांजनाश्रीजी म. ने चारित्र को इस संसार का अजूबा बताया। मुमुक्षुओं को संयम जीवन में प्रवेश की शुभकामना देते हुए एक ही सिख दी कि गुरु आज्ञा ही परम मन्त्र है। तत्पश्चात् सभा में मुमुक्षुओं ने वर्षीदान किया। संगीतकार अनिलजी ने विभिन्न गीतों द्वारा स्वर लहरियां बिखेरते हुए समा बांध कर रखा।

हुबली दादावाड़ी में मंगलमूर्तियां विराजित

हुब्बल्ली 10 नवंबर। हुबली में श्री जिनालय एवं दादावाड़ी में अट्ठारह अभिषेक द्वारा शुद्धिकरण के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

दिनांक 11 नवंबर को मंगलमूर्ति विराजमान विधान आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी म. की निश्रा में हुआ। दादावाड़ी में विधिकारक अनिलभाई द्वारा विधिविधान के साथ एवं गुरु भगवंतों की निश्रा में मंगलमूर्ति लाभार्थी परिवार सुमेरमल पुखराज कवाड, दिलिप कुमार बाबुलाल छाजेड़ एवं जिनकुशल युवा मंच द्वारा विराजमान हर्षोल्लास वातावरण में हुआ। दादावाड़ी कार्यदर्शी पुखराज कवाड ने कार्यक्रम में निश्रा देने हेतु गुरुभगवंतों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर दादावाड़ी अध्यक्ष रमेश बाफणा ने हुब्बल्ली सहित अनेक संघ–संस्थाओं का कार्यक्रम में पधारने पर आभार व्यक्त किया।

इस अवसर में आचार्यश्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि दादागुरुदेव जिनकुशलसूरि से मेरी श्रद्धा एवं अनुराग बहुत पुराना है। तथा मेरे गुरु आ.वि. प्रेमसूरीश्वरजी एवं मुझे स्वप्न में दादागुरुदेव के दर्शन प्राप्त हुए है। उन्होंने खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. से आत्मीय संबन्ध का भी जिक्र किया। उन्होंने मंगलमूर्ति के विराजमान का महत्व श्रद्धालुओं को समझाया। अंत में चैयरमेन लालचंद टिमरेसा ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में जिनकुशल युवा संघ एवं खरतरगच्छ युवा परिषद् हुब्बल्ली शाखा का विशेष योगदान रहा।

नंदुरबार में कन्या संस्कार शिबिर आयोजित

नंदुरबार 15 नवंबर। खरतरगच्छाधिपति पू. आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महत्तरा पदविभूषिता पू. चंपाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी जितेंद्रश्रीजी म. की सुशिष्या धवलयशस्वी पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी जयरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी रश्मिरेखाश्रीजी म., पू. साध्वी चारुलताश्रीजी म., पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी चारित्रप्रियाश्रीजी म. की निश्रा में खान्देश की पावन पुण्यधरा पर पहली बार नंदुरबार नगर में त्रिदिवसीय कन्या संस्कार शिबिर का आयोजन किया गया। जिसमें बालिकाओ ने ही नहीं अपितु श्रावक एवं श्राविकाओं ने भी संपूर्ण भाग लिया। 13 नवम्बर से 15 नवम्बर तक इस शिबिर का आयोजन किया गया।

इस शिबिर का मुख्य उद्देश्य आज के इस भाग–दौड़ और डिजिटल युग में हमारे समाज की परिस्थिति, धार्मिक परंपरा, संस्कृति, भगवान महावीर के उपदेश, माँ बाप के प्रति बच्चों का व्यवहार जैसे अनेक विषयों को ध्यान में रखते हुए पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म. के मुख्य मार्गदर्शन में इस शिबिर का आयोजन किया गया।

शिबिर में मागदर्शन हेतू कल्पेशभाई महेंद्रकुमारजी अरणाईया मुंबई ने अपने बुलंद आवाज में सुंदर प्रस्तुति दी। जिससे बालिकाओं को अपने जीवन की अहमियत के साथ धर्म की सही परिभाषा जानने को मिली।

इस शिबिर में नंदुरबार सहित आस–पास की 120 से ज्यादा बालिकाओं ने सहभाग लिया। 15 नवंबर को शिबिर का समापन समारोह रखा गया, जिसमें गुरुवर्याश्री के द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म. ने शिबिर को संस्कारों की पाठशाला बताया। शिबिरार्थी मुमुक्षु पायल बागरेचा, मुमुक्षु माधुरी चोपडा, दिव्या कोचर, शिवानी छाजेड, नेहा बाफना, मनाली तातेड, सौ. प्रिती भंसाली, भूमिका भंसाली, शुभम भंसाली ने अपने भावों को व्यक्त किया।

इस शिबिर के संयोजक– श्री धिंगडमलजी नरेंद्रकुमारजी बुरड, श्री नाकोडा प्लास्टिक, श्रीमती स्वरूपदेवी मोडमलजी श्रीश्रीमाल, साथ ही सहसंयोजक– श्रीमती सायरदेवी चंपालालजी तातेड परिवार ने लाभ लिया। इस शिबिर का आयोजन श्री सकल जैन श्रीसंघ नंदुरबार द्वारा किया गया।

सभी शिबिरार्थियों को उपहार का वितरण शिबिर के लाभार्थी परिवार द्वारा किया गया। साथ श्रीसंघ द्वारा सभी शिबिर के लाभार्थी परिवारों का और इस शिबिर में मार्गदर्शन देने के लिए पधारे श्री कल्पेश महेंद्रकुमारजी अरणाईया आदि का बहुमान किया गया।

–शुभम गौतमचंदजी भंसाली

सूरत में शासन प्रभावना

सूरत 24 नवंबर। बाड़मेर जैन श्री संघ के तत्वावधान में कुशल दर्शन दादावाड़ी, पर्वत पाटिया सूरत में दि. 24 नवंबर को पू. ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. का 46वां संयम वर्षाभिनंदन के उपलक्ष में धर्मेशभाई द्वारा चारित्र वंदनावली संगीत के साथ कराई गयी। साथ ही संघ द्वारा नाटक, भजन, गीतों एवम् परमेष्ठी पद स्थापित दीर्घ संयमी जीवन के लिए भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी गई।

दि. 29 नवंबर को पूज्य प्रज्ञापुरूष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की पुण्यतिथि दिवस निमित्त प्रवचन के दौरान गुणानुवाद सभा रखी गई।

–चंपालाल बोथरा

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय **श्री मनोज्ञसागरजी म.** आदि ठाणा 2 सूरत नगर में बिराजमान है।

पूज्य मुनि **श्री महेन्द्रसागरजी म.** आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं, जहाँ उनकी पावन निश्रा में उपधान तप का आयोजन प्रारंभ है।

पूज्य मुनि **श्री मनितप्रभसागरजी म.** आदि ठाणा 2 बाडमेर से विहार कर सिणधरी, सिवाना होते हुए मोकलसर पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में बाफना परिवार द्वारा प्रभु भक्ति महोत्सव आयोजित है।

पूज्य मुनि **श्री समयप्रभसागरजी म.** आदि ठाणा 2 बाडमेर में बिराजमान है। वे अध्ययन हेतु बाडमेर बिराजेंगे।

पूजनीया महत्तरा **श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा इन्दौर से विहार कर उज्जैन पधारे हैं।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** सा. आदि ठाणा ने जयपुर से दिल्ली की ओर विहार किया है। वे दिल्ली होकर आगरा पधारेंगे। जहाँ 27 जनवरी 2019 को दादावाडी की प्रतिष्ठा उनकी पावन निश्रा में होगी। दादावाडी का जीर्णोद्धार उनकी प्रेरणा से संपन्न हुआ है।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सुलोचना श्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म.** आदि ठाणा मुंबई में बिराजमान है। वहाँ से विहार कर सूरत, बडौदा होते हुए गिरनार पधारेंगे।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा कच्छ भुज से विहार हो गया है। वे उज्जैन प्रतिष्ठा व दीक्षा अवसर पर पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री मणिप्रभाश्रीजी म. सा.** आदि ठाणा कैवल्यधाम पधार गये हैं। वहाँ उनकी स्थिरता रहेगी। उनका स्वास्थ्य स्थिर है।

पूजनीया माताजी म. **श्री रतनमाला श्रीजी म.** आदि ठाणा ने नागौर से विहार किया है। वे मेडता रोड होते हुए दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में बिजयनगर पहुँचेंगे। वहाँ से भीलवाडा, चित्तौड, मन्दसौर होते हुए उज्जैन पधारेंगे।

पूजनीया बहिन म. **डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा फलोदी से विहार कर लोहावट, ओसियां होते हुए जोधपुर पधारे हैं। पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा बालोतरा से विहार कर जोधपुर पधारे हैं। जोधपुर से सभी साथ विहार कर कापरडाजी, बिलाडा, ब्यावर होते हुए बिजयनगर पधारेंगे। वहाँ से पू. माताजी म. आदि के साथ विहार कर भीलवाडा, चित्तौड, निम्बाहेडा, नीमच, मन्दसौर, जावरा होते हुए उज्जैन पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा शंखेश्वर तीर्थ पर बिराजमान है। वहाँ उनकी निश्रा में नूतन धर्मशाला का उद्घाटन जनवरी के प्रथम सप्ताह में होगा। तत्पश्चात् वे उज्जैन की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा नंदुरबार चातुर्मास की पूर्णाहुति के पश्चात् तलोदा होते हुए बलसाणा तीर्थ की यात्रा करेंगे। तत्पश्चात् उज्जैन की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 ने चौहटन चातुर्मास पूर्ण कर धोरीमन्ना, सांचोर, अहमदाबाद होते हुए पालीताना की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी **श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने मुंबई से छत्तीसगढ की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी **श्री प्रियंवदाश्रीजी म. शुद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा तिरपुर में बिराज रहे हैं। उनका कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् कोयम्बतूर की ओर विहार होगा।

पूजनीया साध्वी **श्री विनीतयशाश्रीजी म.** अर्हम्निधिश्रीजी म. आदि ठाणा ने नवसारी से सूरत, बडौदा होते हुए शंखेश्वर की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी **श्री अभ्युदयाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 ने सांचोर से डीसा, अहमदाबाद होते हुए उज्जैन की ओर विहार किया है। वे अवन्ति प्रतिष्ठा व दीक्षा महोत्सव में पधारेंगे।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर गणित में थोडा कमजोर था। अध्यापक बहुत मेहनत करता था। पर जटाशंकर को गणित ज्यादा समझ में ही नहीं आती थी।

एक दिन दोपहर के समय में मां उसे उदाहरण के साथ जोड़ बाकी गुणा भाग सिखा रही थी। हाथ में पाटी पेन लेकर अपने बेटे से एक सवाल हल करने को कहा।

सवाल पूछते हुए मां ने कहा- बेटा! 10 में से यदि 7 चॉकलेट तेरे बड़े भाई को दे दी जाये, तो पीछे कितनी चॉकलेट बचेगी!

सवाल सुनते ही जटाशंकर ने रोना प्रारंभ कर दिया। मां ने कहा- बेटा! इसमें रोने की कहाँ जरूरत है। तुझे यदि सवाल का जवाब नहीं आता तो कोई बात नहीं, पर रोना किसलिये! सीखते-सीखते सीख जायेगा। चिंता न कर! चुप होजा!

पर जटाशंकर चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

मां ने सांत्वना देते हुए कहा- बेटा! रो मत! मैं तुझे धीरे-धीरे सारी गणित सिखा दूंगी। तूं एक दिन गणित में बड़ा नाम करेगा।

पर जटाशंकर तो अभी भी जोर-जोर से रोये जा रहा था।

आखिर मां ने जोर से कहा- रो क्यों रहा है!

तब रोते-रोते जटाशंकर बोला- मां! तूं हमेशा बडे भाई को ज्यादा ही देती है। आज भी देख! उसके लिये सात चाकलेट और मेरे लिये केवल तीन! मैं रोऊँ नहीं तो क्या करूँ!

मां ने कहा- बेटा! इसमें कुछ लेना देना नहीं है, केवल एक काल्पनिक प्रश्न है समझाने के लिए पर तूं उत्तर देने की अपेक्षा जिद्द पर उतर आया है।

संसार में हम भी जटाशंकर की भांति कल्पनाओं से सुखी और दुखी होते हैं। यथार्थ को कहाँ समझ पाते हैं! जो अपना नहीं है, उसे पाकर राजी होते हैं। उसे न पाकर दुखी होते हैं। यह नहीं समझ पाते कि अपना कभी अलग होता नहीं। और पराया कभी अपना हो सकता नहीं।

जो मेरा है, वह कभी भी मुझसे अलग हो नहीं सकता। और जो मेरा नहीं है, उसे कभी भी मैं अपना बना नहीं सकता। इस सत्य को समझ लेने के बाद हमारी व्यवहार दशा बदल जाती है।

बिकमपुर में प्रथम ध्वजारोहण

बिकमपुर 4 दिसंबर। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी की कर्मभूमि व दूसरे दादा गुरुदेव मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरिजी की की जन्म भूमि श्री विक्रमपुर तीर्थ (बिकमपुर) में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद बीकानेर शाखा द्वारा आयोजित श्री विक्रमपुर तीर्थ यात्रा संघ आयोजित किया गया है। इसी अवसर पर श्री विक्रमपुर तीर्थ के एक वर्ष पूर्ण होने पर प्रथम ध्वजारोहण महोत्सव भी आयोजित है। बीकानेर से एक साल तक 12 बस के लाभार्थी परिवार श्रीमान तनसुखजी डागा परिवार एवं श्री नरेन्द्रजी खजांची परिवार, बीकानेर। दादा गुरुदेव की पूजा के लाभार्थी परिवार है श्री केशरीचन्दजी झंवरलालजी मनोजजी सेठिया परिवार, बीकानेर।

—अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद, बीकानेर शाखा

अवंती तीर्थ
जाजम समारोह

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

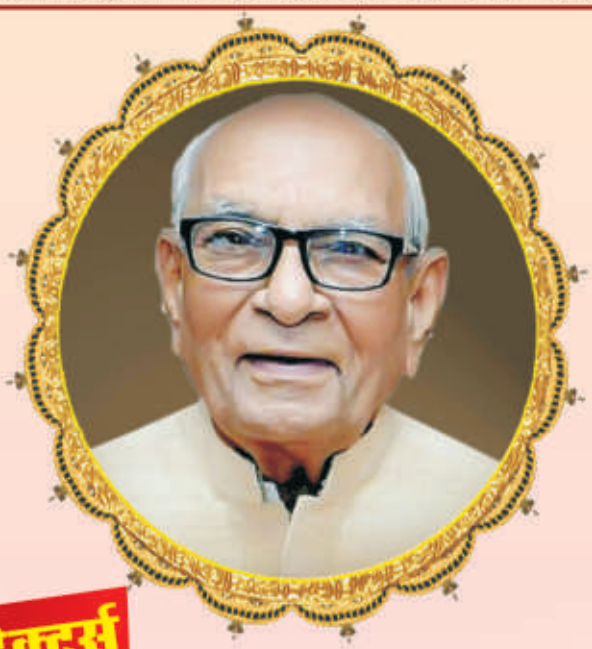

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिंरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408